

### Comparison

### तुलना

You know we were discussing yesterday, if you remember, the question of fear. Most of us are afraid of something or other, and if we can eliminate fear, get rid of it, perhaps we can create a different world altogether. It seems to me to be very important to understand this, especially while we are young. The older we grow, the more difficult it is to withstand the impacts of fear because circumstances are much too strong for most of us. I really want to communicate, to tell you something of this; I feel it is very important because fear corrupts our minds, and when we are afraid, there is no love.

In this world there is no love. We talk about love, we talk about brotherhood, we talk about kindness, about life being one, but those are just words; they have no meaning, they are a lot of words bamboozling, deceiving people. In fact, love does not exist. How can there be love when you see the appalling poverty, the miseries, the very, very powerful people and the poor people?

I think one of the causes of there being no love is fear. If you are afraid of your teacher, of your parents, of what people say, and so on, how can you love? Yet without love, life has no meaning, it becomes very dry, dull, weary; without love you do not really see the flowers, the trees, the birds, and the sunlight on the water, you do not really live, you do not enjoy life. By 'enjoyment' I do not mean going to cinemas or having a good job or having a car—those are external things. The real inward joy of living, the feeling of internal richness, whether you are materially poor or

आपको याद होगा कि कल हम लोग भय पर चर्चा कर रहे थे। हममें से अधिकांश लोग किसी-न-किसी चीज़ से भयभीत हैं और यदि हम भय को मिटा सकें, उससे छुटकारा पा सकें तो शायद हम मिलकर भिन्न प्रकार के विश्व का निर्माण कर सकते हैं। मुझे लगता है कि यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है--विशेष रूप से जब हम युवा हैं। चूंकि जैसे-जैसे हम बड़े होने लगते हैं, भय से छुटकारा पाना हमारे लिए और भी अधिक मुश्किल होने लगता है क्योंकि परिस्थितियां तब इतनी कठिन हो जाती हैं कि हममें से अधिकांश भय के आघातों को झेलने के काबिल ही नहीं रह जाते। मैं वास्तव में आपको इस बारे में कुछ बताना चाहता हूं और मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि भय मन को विकृत कर देता है और जब हममें भय होता है तो प्रेम नहीं होता।

इस संसार में प्रेम कहीं नहीं है। हम प्रेम की चर्चा तो करते हैं, भाईचारे की बात तो करते हैं--उदारता की, जीवन के एक होने की बातें तो ज़रूर करते हैं पर वे सभी बातें कोरा ढकोसला होती हैं, उनमें कोई गहराई नहीं होती, वे लोगों को धोखा देने के लिए, बेवकूफ बनाने के लिए किया जाने वाला शाब्दिक छल भर होता है। वस्तुतः प्रेम कहीं नहीं होता। जब आप अपने आसपास घोर गरीबी और कष्टों को देखते हैं, अत्यंत शक्तिशाली लोगों को और गरीब लोगों को देखते हैं तो वहां प्रेम हो भी कैसे सकता है?

मेरी समझ से, प्रेम के न होने की एक वजह तो भय है। यदि आप अपने शिक्षक से, अपने अभिभावकों से, लोग क्या कहते हैं आदि बातों से भयग्रस्त हैं तो आप प्रेम कैसे कर सकते हैं? किंतु प्रेम के अभाव में जीवन का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता, यह अत्यंत शुष्क, नीरस और बोझिल हो जाता है; प्रेमशून्य होने पर आप न तो वस्तुतः फूलों को, न वृक्षों को, न पक्षियों को और न जल पर पड़ रहे सूरज के प्रकाश को देख पाते हैं, आप वास्तव में जी ही नहीं रहे होते, जीवन का आनंद नहीं उठा रहे होते। 'आनंद उठाने' से मेरा आशय यह नहीं है कि आप सिनेमा देखने जाएं या आपके पास एक अच्छा-सा रोज़गार हो या कार हो--ये सब तो बाहरी बातें हैं। जीवन का सच्चा आंतरिक आनंद, आंतरिक समृद्धि की

rich, that feeling of the earth being ours to be made more beautiful, that longing to bring about a different status in our relationships with each other—these are the important things. But if there is fear, you cannot have these. They come only when there is love in our being. Love is not a thing that you cultivate, it is not a thing you practice. Day after day you may say, ‘I must love, I must be kind, I must be gentle.’ Love does not come out of that; it comes like the sunlight in the morning, without your actually knowing it; it comes only when there is no fear. Please listen to this carefully because when we are young, if we can understand this and have the feeling of it, then nothing can destroy us. You may be poor, you may have no capacity, you may not look well or beautiful, but the thing that makes life rich, really rich, is this quality of love, stripped of all fear.

So, in an educational place like this, surely the first concern, not only of the teachers, but of you and all the members of the Foundation, is to eliminate the real causes of fear. While you are here, it is necessary to explain to each one of you the causes of fear, just as mathematics, geography, or history is explained to you. The teachers may still be afraid, the Foundation members may still be afraid, but for you; it is important that all these things are explained because then you will create a new world, a new education.

I think one of the causes of fear is comparison. You know what ‘comparison’ is? To compare you with somebody else, to compare you with a clever boy, or to compare you with a dull boy, to compare you with Gandhiji or Buddha or Christ—if you are Communist, it won’t be Buddha or

भावना, भौतिक धरातल पर आप चाहे निर्धन हों या संपन्न हों, इस भावना का हृदय में होना कि यह धरती हमारी अपनी है, इसे हम और भी सुंदर बनाएं, आपसी संबंधों को भिन्न आयाम तक ले जाने की तीव्र अभिलाषा का होना—यह सब महत्त्वपूर्ण है। परंतु यदि आपमें भय है तो आपमें ये सारी बातें नहीं हो सकतीं। यह तब ही हो सकता है जब आपके हृदय में प्रेम हो। प्रेम ऐसा कुछ नहीं है जिसे आप प्रयत्न से संवर्धित कर सकें, आप इसका अभ्यास नहीं कर सकते। भले ही आप कहते रहें ‘मुझे प्रेम करना चाहिए, मुझे दयालु होना चाहिए, मुझे नम्र होना चाहिए’। यह सब करने से प्रेम उत्पन्न नहीं होता है, यह तो तब आता है जब भय नहीं रहता। कृपया इसे बहुत सावधानी से, ध्यानपूर्वक सुनें; क्योंकि छोटी सी उम्र में ही यदि हम इसे समझ सकें और इसकी अनुभूति पा सकें तो हमें कोई भी चीज़ कभी नष्ट नहीं कर सकती। हो सकता है कि आप निर्धन हों, आपमें सामर्थ्य न हो, आप अच्छे अथवा सुंदर न दिखाई देते हों, पर जो बात जीवन को वैभवशाली बनाती है, सच में समृद्ध बनाती है वह है प्रेम की यह गुणवत्ता जिसमें भय का लेश भी नहीं है।

अतः इस प्रकार के शैक्षणिक स्थान पर केवल शिक्षकों की ही नहीं, बल्कि आपकी और फाउंडेशन के सभी सदस्यों की भी पहली चिंता यही होनी चाहिए कि भय के वास्तविक कारणों का उन्मूलन कैसे किया जाए। जब तक आप यहाँ हैं तब तक यह जरूरी है कि आपमें से प्रत्येक को भय के कारणों के बारे में उसी तरह स्पष्टतापूर्वक समझाया जाए जिस तरह से गणित, भूगोल या इतिहास आदि आपको समझाया जाता है। भले ही शिक्षक भयग्रस्त हों या फाउंडेशन के सदस्य भय से मुक्त न हों, परंतु आपके लिए यही महत्त्वपूर्ण है कि ये सारी बातें आपको स्पष्टतः बतलाई जाएं ताकि आप एक नये विश्व का, नयी शिक्षा का सृजन कर पाएं।

मुझे ऐसा लगता है कि तुलना भय के कारणों में से एक है। क्या आप जानते हैं कि ‘तुलना’ क्या है? किसी दूसरे से आपकी तुलना किया जाना, किसी चतुर बालक से आप की तुलना किया जाना, गांधी जी, बुद्ध या ईसा से आपकी तुलना किया जाना—और यदि आप कम्युनिस्ट हैं तो आपकी तुलना बुद्ध अथवा ईसा से नहीं बल्कि स्तालिन या लेनिन से की जा सकती है—किसी भी दूसरे से

Christ, it will be Stalin or Lenin—to compare you with somebody else is the beginning of fear. I will show you why; we will go into it, and you will see the importance of not fearing. Our whole society is based on comparison, is it not? We think comparison is necessary for growth. I compare myself with another politician and say, ‘Well, I must beat him, I must be better than him.’ When a teacher compares you with another boy who is perhaps a little cleverer, what is happening to you? Have you noticed what happens to you when you are compared with someone else? The teacher says to you; ‘Be as clever as that other boy.’ To make you as clever, as strenuous, as studious as the other boy or girl, he gives you grades, he gives you marks and so you keep on struggling, competing; you are envious of the other boy. So, comparison breeds envy, jealousy; and jealousy is the beginning of fear. When you are compared with another boy, you; as an individual boy or girl, are not important, but the other is important. When you compare yourself with somebody else, the somebody else is more important than you. Is it not so? You as an individual with your capacities, with your tendencies, with your difficulties, with your problems, with your being, are not important, but somebody else is important, and so you; as a being, are pushed aside and you are left struggling to become like somebody else. In that struggle is born envy, fear. Watch yourself in class when the teacher compares you with another, gives you different marks, different grades; you are destroyed, your own capacities, your own innate being, get suppressed. You hear about ‘soul’ and ‘freedom’ and all the rest of it, but those are just words because when you are compared with somebody else, you are being destroyed. You may be dull

आपकी तुलना किया जाना भय की शुरुआत है। मैं आपसे इसे स्पष्ट करूंगा, ऐसा क्यों है यह आपको दिखाऊंगा, हम इस विषय में चर्चा करेंगे और तब आप देख पाएंगे कि भयरहित होना कितना महत्वपूर्ण है। हमारा सारा समाज तुलना पर आधारित है। हमें लगता है कि विकास करने के लिए तुलना करना आवश्यक है। मैं अपनी तुलना किसी दूसरे राजनीतिज्ञ से करता हूँ और कहता हूँ, “अच्छा ठीक है, मैं उसे पीछे छोड़ दूंगा, मुझे उससे बेहतर बनना होगा।” जब कोई शिक्षक आपकी तुलना किसी अन्य बालक से करता है जो शायद आपसे अधिक चतुर है तो आप क्या महसूस करते हैं? क्या आपने गौर किया है कि जब आपकी तुलना किसी और से की जाती है तो आपको कैसा लगता है? शिक्षक जब आपसे कहता है, “उस लड़के की तरह चतुर बनो” तो आप क्या अनुभव करते हैं? उस जैसा चतुर बनाने के लिए, उसके जैसा मेहनती बनाने के लिए, किसी अन्य लड़के या लड़की की तरह अध्ययनशील बनाने के लिए वह आपको श्रेणी प्रदान करता है, आपको अंक देता है और इस तरह आप संघर्ष जारी रखते हैं, प्रतिस्पर्धा करते हैं, उस दूसरे लड़के से ईर्ष्या करने लगते हैं। अतः तुलना ईर्ष्या को जन्म देती है, द्वेष की भावना जगाती है और द्वेष ही भय की शुरुआत है। जब आपकी तुलना किसी दूसरे लड़के से की जाती है तो स्वतंत्र बालक या बालिका के रूप में आपकी विशिष्टता महत्वहीन हो जाती है और वह दूसरा लड़का महत्वपूर्ण हो जाता है। है न? एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में आपकी क्षमताएं, आपकी प्रवृत्तियां, आपकी दिक्कतें, आपकी मुश्किलें, और आप स्वयं जो कुछ हैं महत्वपूर्ण नहीं होते बल्कि कोई दूसरा महत्वपूर्ण हो जाता है। और तब आप, अर्थात् एक व्यक्ति-विशेष, उपेक्षित हो जाता है और आप किसी अन्य के बराबर होने के लिए संघर्ष करने लगते हैं। इस संघर्ष से ही ईर्ष्या और भय पैदा होते हैं। जब शिक्षक कक्षा में किसी दूसरे से आपकी तुलना करता है, आपको उससे भिन्न, कम या अधिक अंक देता है, भिन्न श्रेणी प्रदान करता है तो ध्यानपूर्वक स्वयं का निरीक्षण करें, इस प्रकार से आपको नष्ट किया जाता है, आपकी प्रतिभाएं, आपकी चेतना भीतर तक कुंठित हो जाती है। आप ‘आत्मा’ और ‘स्वतंत्रता’ एवं इस प्रकार की दूसरी तमाम बातें सुनते रहते हैं, पर वे बस शब्द-भर होते हैं क्योंकि जब भी आपकी किसी अन्य से तुलना की जाती है आपको खत्म किया जा रहा होता है। हो सकता है आप मंदबुद्धि हों या नासमझ हों, लेकिन तब भी आप उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना वह

or stupid, but you are as important as that other boy or girl whom the teacher or the parent considers intelligent.

So, should not a school, an educational centre of this kind, eliminate comparison altogether because you are important and not somebody else? Then your teacher has to be much more watchful of each individual, has he not? The difficulty is that the parents are not interested in all this; they want you to pass an examination, to get a job, and that is all they are interested in. So, what do they do? At home, they compare you with your elder brother or nephew or niece and say, 'Be as clever as that.' That is not love. When there is comparison, there is no love. You know when there are many children, the mother, if she really loves her children, does not compare. Each one is as important as the other. Is it not so? Unless the mother is stupid, callous, unintelligent, she does not pick out one boy of the family and say, 'He is my favourite and you must all be like him.'

The real mother, with love in her being, does not compare. The cripple, the stupid, is as important as the clever. In the same way, here we must not have an ideal and say we are going to work towards it; we must eliminate all this competitive comparison.

The teacher has to study each boy and find out his capacities, in what way he is making progress, in what way he is studying. Perhaps you should not use that word progress at all. The difficulty is how to help each boy or girl to be studious, to learn. We learn now through comparison, through competition, through grades; we are forced, are we not? If you are lazy in the class, what happens? You are

दूसरा लड़का या दूसरी लड़की जिसे आपके शिक्षक या माता-पिता मेधावी समझते हैं।

इसलिए प्रश्न यह है कि क्या इस प्रकार के शिक्षा संस्थान को, ऐसे विद्यालय को तुलना से पूरी तरह मुक्त नहीं कर देना चाहिए? क्योंकि अभी आप ही महत्त्वपूर्ण हैं न कि कोई अन्य। उस स्थिति में आपके शिक्षक के लिए यह ज़रूरी हो जाएगा कि वह प्रत्येक के प्रति, व्यक्तिगत रूप से ध्यान दे। मुश्किल यह है कि इस सब के बारे में अभिभावकों की कोई रुचि नहीं होती, वे बस इतना ही चाहते हैं कि आप परीक्षा में पास हो जाएं, रोजगार पा लें। उनकी दिलचस्पी बस यहीं तक होती है। इसलिए वे क्या करते हैं? वे आपकी तुलना घर के किसी अन्य व्यक्ति से, आपके बड़े भाई से या भतीजे या भतीजी से करते हैं और आपसे कहते हैं, "उसकी तरह होशियार बनो।" यह प्रेम नहीं है। जहां तुलना है वहां प्रेम नहीं होता। आप जानते हैं, जहां कई भाई-बहन होते हैं वहां उनकी माता, यदि सचमुच उसे अपने बच्चों से प्रेम है, उनकी आपस में तुलना नहीं करती। उनमें से प्रत्येक समान रूप से महत्त्वपूर्ण होता है। ऐसा होता है न? जब तक मां बिलकुल ही मूर्ख, निष्ठुर और नासमझ न हो तब तक वह उनमें से किसी को चुनकर यह न कहेगी कि यह मुझे प्रिय है और तुम सभी को इसके जैसा होना होगा।

सच्ची मां, जिसके हृदय में वात्सल्य होता है, कभी तुलना नहीं करती। उसके लिए अपंग या मूर्ख बच्चे भी चतुर बच्चे की तरह महत्त्वपूर्ण होते हैं। इसी तरह, यहां पर भी हमें कोई आदर्श निश्चित नहीं करना है जिसकी प्राप्ति में हमें लग जाना हो, हमें तो इस सारी प्रतिस्पर्धात्मक तुलना को पूरी तरह मिटाना है।

शिक्षक को प्रत्येक बालक का अध्ययन करना होगा और यह पता लगाना होगा कि वह कैसी प्रगति कर रहा है, वह किस ढंग से पढ़-लिख रहा है। शायद प्रगति शब्द का प्रयोग आप न ही करें तो अच्छे। कठिनाई यह है कि प्रत्येक बालक और प्रत्येक बालिका को किस प्रकार से मदद की जाए जिससे वह अध्ययनशील हो सके, सीख सके। वर्तमान में हम तुलना के द्वारा, प्रतिस्पर्धा के द्वारा, अंक और श्रेणी पाते हुए सीखते हैं, हमें इस प्रकार बाध्य किया जाता है, ऐसा ही है न? यदि कक्षा में आप

pointed out as being lazy and the other boy as active. The teacher says, 'Why don't you be like him?' and you are given lower marks than the other boy or girl, so you struggle and struggle and struggle to learn mathematics, and what happens? Your brain, your being, is all the time being twisted because you are not interested in mathematics. But you may be interested in something else through which you can learn mathematics.

So, to eliminate fear is extremely difficult; it must be done radically, right from the beginning, from childhood, from the kindergarten, from the smallest age, until you leave this place. It is our job, it is not an 'ideal.' It must be done every day, and we must work it out as we are doing now because, you see, in this so-called civilized world, competition leads to ruthlessness. Do you understand what that word means? It means brutality, disregard of another, not thinking of another. Because you are ambitious, competitive, you are aggressive, you want to get more and more, but like you; everybody else also thinks he has a right to get more, and so he struggles. Our society is built on this—on envy, on jealousy, on ambition—in the name of the country, in the name of the people, and all the rest of it—but you are the centre.

This competition leads ultimately to war, to the destruction of people, to greater misery. Seeing all this throughout the world, is it not right that a few of us who are really interested in this kind of education should sit down and work out a way of teaching, of living, of educating, in

सुस्त हैं तो क्या होता है? आपकी ओर संकेत कर आपको सुस्त कहा जाता है जबकि किसी अन्य को फुर्तीला कहा जाता है। शिक्षक कहता है, "आप उस जैसे क्यों नहीं हो? और आपको उस अन्य बालक या बालिका से कम अंक दिए जाते हैं, अतः और अधिक संघर्ष करते हुए, निरंतर संघर्ष में लगे रहकर आप गणित आदि सीखते हैं और इसका परिणाम क्या होता है? आपका मस्तिष्क, आपका अंतर्मन लगातार दबाव में रहता है, यह दबाव आपके चित्त को निरंतर तोड़ता-मरोड़ता रहता है क्योंकि गणित में आपकी बिलकुल रुचि नहीं है। पर हो सकता है कि आपकी रुचि किसी दूसरी चीज़ में हो जिसके माध्यम से आप गणित सीखना शुरू कर दें।

अतः भय का उन्मूलन करना अत्यधिक कठिन है, इसे तो बुनियाद से ही, बिलकुल प्रारंभ से ही, बचपन से ही जब आप किंडरगार्टन में होते हैं तभी, यथासंभव छोटी उम्र में ही कर दिया जाना चाहिए—आप इस स्थान को छोड़ें तब तक अवश्य ही कर दिया जाना चाहिए। यह हमारा कार्य है, यह कोई 'आदर्श' नहीं है। इसे तो हर रोज़ किया जाना है और जिस तरह से हम इस समय यह कार्य कर रहे हैं उसी तरह से किया जाना है क्योंकि इस तथाकथित सभ्य संसार में आप देखते ही हैं कि प्रतिस्पर्धा हमें क्रूरता की दिशा में ले जा रही है। क्या आप उस शब्द का आशय समझते हैं? इसका अर्थ है बर्बरता, दूसरे की अवहेलना, दूसरे की उपेक्षा करना। चूंकि आप महत्वाकांक्षी हैं, प्रतिस्पर्धा की भावना से भरे हैं, आक्रामक हैं, इसलिए अधिक से अधिक पाना चाहते हैं, लेकिन आपकी ही तरह दूसरा मनुष्य भी यही सोचता है कि अधिक पाने का अधिकार उसे भी है और इसीलिए वह भी संघर्ष करने लगता है। इस नींव पर हमारे समाज का ढांचा बना है—ईर्ष्या पर, द्वेष पर, महत्वाकांक्षा पर—फिर यह सब भले ही राष्ट्र के नाम पर, लोगों के नाम पर और ऐसी तमाम बातों के नाम पर क्यों न हो—पर उसका केंद्र आप ही हैं।

यह प्रतिद्वंद्विता अंततः आपको युद्ध की ओर ले जाती है, लोगों के विनाश की ओर, और बड़े क्लेशों की ओर ले जाती है। यह देखने के बाद कि यही सारी दुनिया में हो रहा है, क्या यह उचित नहीं होगा कि हममें से कुछ लोग जो इस प्रकार की शिक्षा में रुचि रखते हैं, मिलकर बैठें और अध्यापन का, जीने का, शिक्षा का ऐसा तरीका खोज निकालें जिसमें कोई तुलना न हो, ऐसी कोई बात न हो कि आपसे

which there is no comparison, in which there is no sense of somebody being more important than you? You are as important as anyone else, but the teacher has not found out how to awaken your interest. If the teacher can find a way to arouse your interest, then you will be as good as the others.

So, I think it is very important, while we are young, to understand this business of comparison. We think we learn by comparison, but really we do not. The real inventor, the really creative person is not comparing, he is just acting, living; he does not say 'I must be as good as Edison or Rama'; he works, he lives.

When you write a poem, if you compare your work with somebody else's, what happens to your poem? If you compare yourself with Keats, with Shelley, or any other great poet, then you cease to write at all. You should write because you have something to say. You may put it badly, what you write may not have the right rhythm, your words may not be rich, easy, flowing, but you have something to say. What you say—no matter how stupid it is—is as important for you as what has been said by Keats or Shelley or Shakespeare. But if you compare, you cannot write.

Have you ever painted? Do you ever paint? When you paint a tree, the tree tells you something. The tree gives you its significance. The beauty of it, the quietness, the movement, the shades, the depth, the shape, the flutter of a leaf all tell you something—and you paint; you do not merely copy a leaf, but you express the feeling of the tree. But in expressing it, if your mind compares your work with one of the great painters, then you cease to paint,

ज्यादा कोई दूसरा महत्त्वपूर्ण है। आप भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितना कि कोई अन्य, परंतु शिक्षक अभी तक यह नहीं पता कर सका है कि आपकी रुचि को वह कैसे जगाए। और यदि शिक्षक किसी न किसी तरीके से आपकी रुचि को जगा पाता है तो आप भी औरों के समान ही होंगे।

इसलिए, मुझे यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण जान पड़ता है कि अभी जब आप छोटे ही हैं, तुलना की इस गतिविधि को भली-भांति समझ लें। हम समझते हैं कि तुलना होने पर हम सीखते हैं, पर वास्तव में तुलना होने पर हम कतई नहीं सीख सकते। सच्चा शोधकर्ता, एक वास्तविक सृजनशील मनुष्य तुलना नहीं करता, वह बस क्रियाशील होता है, जीता है, वह ऐसा नहीं कहता कि मुझे एडीसन या राम जैसा श्रेष्ठ होना है; वह कार्य करता है और जीता है।

जब आप कोई कविता लिख रहे हों, उस समय यदि आप अपने कार्य की तुलना किसी अन्य के कार्य से करें तो क्या होता है? यदि आप अपनी तुलना कीट्स, शेली या किसी दूसरे महान कवि से करते हैं तो आप कविता लिख ही नहीं पाते। आप केवल इसलिए लिखते हैं क्योंकि आपके पास कहने के लिए कुछ है। चाहे आपकी अभिव्यक्ति समृद्ध न हो, उसमें शायद छंद, लय आदि का ध्यान न रखा गया हो, और हो सकता है आपके पास खूब सारे शब्द न हों, वे सरल और प्रवाहपूर्ण न हों, पर आपके पास कहने के लिए कुछ अवश्य होता है। आप जो कुछ कहते हैं वह भले ही एकदम बेतुका हो, परंतु आपके लिए वह उतना ही महत्त्वपूर्ण होता है जितना कि कीट्स या शेली या शेक्सपीयर का लिखा हुआ। पर यदि आप तुलना करेंगे तो लिख ही नहीं सकेंगे।

क्या आपने कभी चित्रकारी की है? क्या आप कभी चित्र बनाते हैं? जब आप किसी वृक्ष का चित्र बनाते हैं तो वृक्ष आपसे कुछ कह रहा होता है। वृक्ष अपना अर्थ आपके सामने प्रकट करता है। इसका सौंदर्य, इसकी खामोशी, इसकी चंचलता, इसके रंग, इसकी गहनता, आकृति, किसी पत्ते के खड़कने की आवाज, ये सभी आपसे कुछ कह रहे होते हैं—और आप उसे चित्रित करते हैं; आप किसी पत्ते की नकल ही नहीं बनाते, बल्कि आप तो उस वृक्ष की भावना को ही अभिव्यक्त करते हैं। पर यह करते समय यदि आपका मन इसकी तुलना महान चित्रकारों से करने

don't you? I see you have not done any of these things. It is too bad! What you miss in life! Probably you are very good at mathematics or science—which are also necessary, but if you miss all the rest, mathematics and passing a few examinations have no meaning at all. You become such dull human beings.

What is important is to understand what fear is and to eliminate fear. One of the causes of fear is envy, and envy is comparison. A society based on comparison, envy, is bound to create misery for itself and for others. You know, a contented person is not one who has achieved a result but one who understands things as they are and goes beyond them. But to understand things as they are, it is no good if your mind is always comparing, judging, weighing. Such a mind can never understand things. To put it very simply, if you are compared with somebody else, you are not important, are you? In that comparison, there is no love, is there? Our society, our schools, our education, our big people—they have no love. So, all our society, all our culture is going to pieces; everything is deteriorating. That is why it is very important that at this place, here at Rajghat, that the teacher, the Foundation members, and the students create this new feeling.

लगे, तो आपका चित्र बनाना रुक जाता है कि चलता रहता है? मुझे लगता है कि आपने यह सब नहीं किया है। यह तो बड़े अफसोस की बात है! आपका जीवन कैसे इस सब से वंचित है! शायद गणित या विज्ञान विषय में आप बहुत अच्छे हों—हालांकि वे भी आवश्यक हैं, परंतु यदि आप बाकी सब से वंचित रह जाते हैं तो गणित आदि और कुछ परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लेना कोई मायने नहीं रखता। इस तरह तो आप मंद, सुस्त बन जाएंगे।

महत्त्व की बात यह समझना है कि भय क्या है और भय को मिटाया कैसे जाए। भय के कारणों में से एक है ईर्ष्या, और ईर्ष्या है तुलना। तुलना की, ईर्ष्या की बुनियाद पर बना समाज अपने लिए और दूसरों के लिए भी क्लेश ही पैदा करेगा। आपको पता है, एक संतुष्ट व्यक्ति वह नहीं है जिसने अपनी चाही हुई चीज़ को पा लिया है बल्कि संतुष्ट वह है जो सभी बातों को यथावत देख-समझ लेता है और उनसे पार निकल जाता है। पर वस्तुओं को वे जैसी हैं उसी रूप में समझने के लिए यह ज़रूरी है कि आपका मन निरंतर तुलना में, आंकने में, माप-तोल में न उलझा रहे। ऐसा मन चीज़ों को कभी नहीं समझ सकता। इसे सरल ढंग से ऐसे कह सकते हैं कि यदि आपकी तुलना किसी अन्य से की जाती है तो आपका कोई महत्त्व नहीं रहता, या रहता है? उस तुलना में प्रेम नहीं है—कि है? हमारा समाज, हमारे विद्यालय, हमारी शिक्षा, हमारे बड़े-बड़े लोग—उनमें प्रेम नहीं है। इसलिए, हमारा सारा समाज, हमारी सारी संस्कृति टूट कर बिखरती जा रही है, सब कुछ पतन की ओर जा रहा है। इसलिए यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि इस जगह पर, यहां राजघाट में शिक्षक, फाउंडेशन के सदस्यगण और विद्यार्थी इस नयी भावना का सृजन करें।